भासा लिपि आउ बेआकरन

भासा–जउन माध्यम से मनुस्य अप्पन हिरदा में उठल भाव इया बिचार के बोल इया लिख के दोसरा तक पहुँचावऽ हे, भासा कहल जा हे। संसार में लगभग अढ़ाई हजार भासा के लिखल-बोलल जा हे। एकरा में मगहियो एगो महत्वपूर्न भासा हे जे बिसाल छेत्र के लोकाभिब्यक्ति के माध्यम हे।

लिपि–भासा बोले में ध्वनि के परयोग होवऽ हे आउ लिखे में लिपि चिन्ह माने अच्छर के। ई लेल सब्भे लिखित भासा के एगो लिपि होवऽ हे।

मगही के अप्पन लिपि कैथी हे। पहिले के पोथी–पतरा आउ बही–खाता में एकरे बेवहार होवऽ हल बाकि अब हिन्दी जइसन देवनागरी लिपि के बेवहार होइत हे।

बेआकरन–ऊ सास्त्र जेकरा से भासा के सुद्ध-सुद्ध बोले, पढ़े आउ लिखे के जानकारी मिलऽ हे, बेआकरन कहल जा हे।

बे+आ+करन–बेआकरन। बेआकरन सबद के अर्थ हे–बिस्लेसन अर्थात् खंड–खंड करना। बेआकरन भासा के खंड–खंड करके ओकर सब अंग के सामने परगट करऽ हे।

स्पष्टत बेआकरन के संबंध भासा से हे। भासा वाक्य से बनऽ हे। वाक्य सबद से आउ सबद बरन इया अच्छर के मेल से बनऽ हे। एही क्रम में वाक्य में कहाँ कउन चिह्न के परयोग होवऽ हे साथ ही भासा में कउन छन्द आउ अलंकार के परयोग कैल गेल हे भासा के एही अंग के बिवेचन ला बेआकरन के मुख्य रूप से पाँच भाग में बाँट के अध्ययन कैल जा हे :

(1) बरन इया ध्वनि बिचार : बरन बिचार में भासा के बरन इया ध्वनि के उच्चारन, बर्गीकरन, लिखे के रीति आउ ओकर मेल से सबद बनावे के नियम आदि के बतावल जा हे।

(2) **सबद बिचार** : सबद बिचार में सबद के भेद, सबद रचना आउ मूल रूप के अधार पर नया रूप के निरमान के रीति बतावल जा हे।

(3) **वाक्य बिचार** : वाक्य बिचार में सबद के परस्पर संबंध आउ सबद के अधार पर वाक्यांस बनावे के नियम आदि बतावल जा हे।

(4) **चिह्न बिचार** : भासा के अर्थ बोध में सुगमता ला वाक्य में स्थान-स्थान पर कम इया अधिक समय तक ठहरे पड़ऽ हे। एही ठहराव के सूचना ला भिन्न-भिन्न चिह्न के परयोग कैल जा हे, जेकरा बिराम चिह्न कहल जा हे।

चिह्न बिचार में तरह-तरह के चिह्न के परयोग के जानकारी देल जा हे।

(5) **छन्द विचार** : छन्द केकरा कहल जा हे, भासा में छन्द से सम्बन्धित ओकर अंग आउ भेद-उपभेद, उदाहरन आदि के बतलावल जा हे।

एही तरह अलंकार केकरा कहल जा हे, अलंकार के भेद, ओकर लच्छन आउ उदाहरन देके समझावल जा हे।

ई तरह से छन्द आउ अलंकार से सम्बन्धित जानकारी छन्द बिचार में देल जा हे।

अभ्यास के प्रस्न

1. भासा के परिभासा दऽ।
2. लिपि का हे ? मगही के पुरनकी आउ नइकी लिपि के नाम बतावऽ।
3. बेआकरन केकरा कहल जा हे ? बेआकरन के केतना भाग होवऽ हे ? स्पस्ट करऽ।

●

बरन बिचार

बरनमाला : भासा के सबसे छोटहन इकाई ध्वनि होवऽ हे। मूल ध्वनि, जेकर खंड न हो सके, बरन इया अच्छर कहला हे। **जइसे :** क, ख, ग, च, छ, प आदि। बरन इया अच्छर समूह के बरनमाला कहल जा हे। बरन इया अच्छर दू प्रकार के होवऽ हे : 1. स्वर बरन 2. ब्यंजन बरन।

1. स्वर बरन : स्वर स्वतंत्र बरन हे जेकर उच्चारन बिना कउनो दोसर बरन के सहायता के कैल जा हे। एकर उच्चारन साँस द्वारा स्वतंत्रता से होवऽ हे। **जइसे :** अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, ई सब्भे सामान्य स्वर ध्वनि हे जेकर संख्या इगारह हे। मगही में कुछ बिसेस स्वर ध्वनि के बेवहार भी होवऽ हे। जइसे–अ, अऽ, ऑ ।

2. ब्यंजन बरन : ब्यंजन बरन के उच्चारन स्वर बरन के सहायता से होवऽ हे। एकर उच्चारन साँस के स्वतंत्रता से न हो हे। **जइसे :**

कवर्ग – क्+अ=क, ख्+अ=ख, ग्+अ=ग, घ्+अ=घ, ङ्+अ=ङ

चवर्ग – च, छ, ज, झ, ञ

टवर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण

तवर्ग – त, थ, द ध न

पवर्ग – प, फ, ब, भ, म

अन्तस्थ – य, र, ल, व

उस्म – श, ष, स, ह

ई तेंतीसो अच्छर ब्यंजन कहला हे। एकर अलावे मगही में कुछ दोसर ब्यंजन ध्वनि के बेवहार भी होवऽ हे। **जइसे :** ड़, ढ़

अनुस्वार (ं) आउ बिसर्ग (ः) दू गो दोसर ब्यंजन भी मगही में हे **जइसे :**

अ + ं = अं

अ + ः = अः

अनुस्वार आउ बिसर्ग मात्र ब्यंजन हे ई लेल ओकरा साथे हल् चिन्ह (्) न लगे।

बरनमाला में तीन गो संजुक्ताच्छर के भी बेवहार होवऽ हे क्ष, त्र, ज्ञ, ई सब्भे नीचे लिखल ढंग से बनल हे – क्+ ष= क्ष मगही में उच्चारन छ होवऽ हे :

त् + र = त्र (मगही में उच्चारन तर भी हो हे, त्र भी)

ज् + ञ = ज्ञ (मगही में उच्चारन ग्य होवऽ हे).

मगही लेखन में चन्द्र बिन्दु भी परयोग होवऽ हे। **जइसे** : गाँव, चाँद, साँस, बाँध आदि ।

उच्चारन के हिसाब से ब्यंजन बरन के तीन भाग में बाँटल जा सकऽ हे :

1. स्पर्स 2. अन्तस्थ 3. उस्म

एकरा नीचे लिखल तालिका से समझल जा सकऽ हे :

क्र.सं.	स्थान	नाम	स्वर	व्यंजन	अन्तस्थ	उस्म
1.	कंठ से	(कंठ्य)	अ, आ	क ख ग घ ड़	–	ह
2.	तालू से	(तालव्य)	इ ई	च छ ज झ ञ	य	श
3.	मूरधा	(मूरधन्य)	ऋ	ट ठ ड ढ ण	र	ष
4.	दाँत से	(दन्त्य)		त थ द ध न	ल	स
5.	ओठ से	(ओस्ट्य)	उ, ऊ	प फ ब भ म	–	–
6.	नाक से	(नासिक्य)		ड़ ञ ण न म (ं)	–	–
7.	कंठ + तालू से	(कंठ तालव्य)	ए, ऐ	– – –		
8.	दांत + ओठ से	दंतोस्ट्य	– –	– – –	व	–
9.	कंठ + ओठ से	कंठोस्ट्य	ओ, औ	– – –		

ड़ ढ़ के उच्चारन मूरधा से होवऽ हे ई लेल ई दूनो मूरधन्य कहलावऽ हे।

स्पर्स ध्वनि : स्पर्स ध्वनि के उच्चारन में मुँह के अन्दर इया बाहर के दूगो उच्चारन अवयव एक दूसरा के एतना जोर से स्पर्स करके सहसा खुलऽ हे कि नि:स्वास थोड़ा देर ला बिल्कुल रूक के फिर बेग से एकदमे बाहर निकलऽ हे।

अन्तस्थ ध्वनि : अन्तस्थ ध्वनि के उच्चारन में मुख बिवर सँकरा तो कर देवल जा हे बाकि न तो एतना अधिक कि स्पर्स इया संघर्सी ध्वनि निकले आउ न एतना कम कि ध्वनि स्वर के रूप धारन कर लेवे अर्थात स्वर आउ ब्यंजन के बीच के ध्वनि अन्तस्थ कहलावऽ हे। य, र, ल, व अन्तस्थ ध्वनि हे ।

उस्म ध्वनि : उस्म ध्वनि के उच्चारन में मुख बिवर के खुला रहे पर भी नि: स्वास एतना जोर से फेंकल जा हे जेकरा से हवा के संघर्सन होवे।

उच्चारन में हवा प्रच्छेपन के बिचार से ब्यंजन बरन के दूगो भेद होवऽ हे :

1. अल्पप्रान 2. महाप्रान ।

1. अल्पप्रान : जउन ब्यंजन बरन के उच्चारन में कम भार पड़ऽ हे आउ जेकरा में हकार जइसन ध्वनि न होवे, अल्पप्रान कहला हे। स्पर्स बरन के सब्भे वर्ग के पहिला, तीसरा आउ पाचवाँ बरन, चारो अन्तस्थ बरन, ङ आउ अनुस्वार (ं) अल्पप्रान ब्यंजन हे।

जइसे :

कवर्ग में	–	क ग ङ
चवर्ग में	–	च ज ञ
टवर्ग में	–	ट ड ण
तवर्ग में	–	त द न
पवर्ग में	–	प ब म
अन्तस्थ में	–	य र ल व ह ङ (ं)

2. महाप्रान : जउन ब्यंजन बरन के उच्चारन में जादे भार पड़ऽ हे आउ हकार के ध्वनि के मिस्रन रहऽ हे, महाप्रान कहला हे। स्पर्स बरन के हरेक वर्ग के दूसरा, चउथा आउ सब्भे उस्म बरन महाप्रान ब्यंजन हे।

जइसे :

कवर्ग में	–	ख, घ
चवर्ग में	–	छ, झ

टवर्ग में – ठ, ढ

तवर्ग में – थ, ध

पवर्ग में – फ, भ

उस्म में – श, ष, स, ह

नाद के दृस्टि से ब्यंजन बरन के दू भेद होवऽ हे :

1. घोस बरन 2. अघोस बरन ।

घोस बरन : घोस बरन के उच्चान में स्वर तंत्री झंकरित होवऽ हे। हर वर्ग के पिछला तीनो ब्यंजन, सब्भे अन्तस्थ, सब्भे स्वर बरन आउ उस्म बरन के ह, घोस बरन हे :

कवर्ग – ग घ ङ

चवर्ग – ज झ ञ

टवर्ग – ड ढ ण

तवर्ग – द ध न

पवर्ग – ब भ म

अन्तस्थ – य र ल व

उस्म – ह

स्वर – सब्भे स्वर बरन

2. अघोस बरन : अघोस बरन के उच्चारन में स्वर तंत्री झंकरित न होवऽ हे, खाली साँस के उपयोग होवऽ हे। सब्भे वर्ग के पहिला दू अच्छर, उस्म बरन के श, ष, स अघोस बरन हे। **जइसे :**

कवर्ग – क ख

चवर्ग – च छ

टवर्ग – ट ठ

तवर्ग – त थ

पवर्ग – प फ

उस्म – श ष स

हरेक वर्ग के पाँचवाँ अच्छर अर्थात् ङ्, ञ्, ण, न्, म् के अनुनासिक ब्यंजन कहल जा हे, काहे कि एकर उच्चारन नासिका से होवऽ हे। एकर बदले अनुस्वार भी लिखल जा हे—गङ्गा-गंगा, पञ्च-पंच, दण्ड-दंड, सन्त-संत, दम्भ-दंभ।

अभ्यास के प्रस्न

1. स्वर आउ ब्यंजन बरन का हे ? उदाहरन दे के समझावऽ।
2. उच्चारन के हिसाब से ब्यंजन बरन के कै भेद होवऽ हे? बरनन करऽ।
3. उच्चारन में वायु प्रच्छेपन के बिचार से ब्यंजन बरन के केतना भेद होवऽ हे? बरनन करऽ।
4. नाद के बिचार से ब्यंजन बरन के कै भेद होवऽ हे? बरनन करऽ ।
5. नीचे लिखल ध्वनियन के उच्चारन स्थान बतावऽ ।

   अ, ई, ऋ, ऊ, ए, ग, ठ, ध, भ, र, स।

●

संधि

जब दू सबद इया पद एक दूसरका के बहुत पास आवऽ हे तब उच्चारन के सुबिधा ला पहिला सबद के अंतिम आउ दूसरका सबद के पहिलका अच्छर एक दूसरा में मिल जा हथ। दुन्नो के मेल से एगो भिन्न अच्छर के निरमान हो जा हे। दू अच्छर के ई तरह के मेल संधि कहला हे। अर्थात् दू बरन के मेल से होवे वाला बिकार संधि कहलावऽ हे।

जइसे : परम + अरथ = परमारथ।

एकरा में परम के अंतिम अच्छर 'म' के 'अ' आउ अरथ के पहिलका अच्छर अ के मेल से आ बनल हे जेकरा से परमारथ बन गेल।

संधि के ***तीन प्रकार*** होवऽ हे :

1. स्वर संधि
2. ब्यंजन संधि
3. बिसर्ग संधि

1. **स्वर संधि** : दू गो स्वर के मेल से उत्पन्न बिकार के स्वर संधि कहल जा हे। **जइसे :**

महो + इन्दर = महीन्दर

ई + (इ) = (ई)

स्वर संधि के दीर्घ, गुण, बृद्धि, यण्, आउ अयादि पाँच भेद होवऽ हे।

(i) **दीर्घ स्वर संधि :**

नियम : दू गो सबरन स्वर मिल के दीर्घ हो जा हे। **जइसे :**

संधि	उदाहरन
अ + अ = आ	परम + अरथ = परमारथ
अ + आ = आ	दिव्य + आसन = दिव्यासन

आ + अ	= आ	बिद्या + अर्थी	= बिद्यार्थी
आ + आ	= आ	बिद्या + आलय	= बिद्यालय
इ + इ	= ई	कवि + इन्दर	= कवीन्दर
इ + ई	= ई	गिरि + ईस	= गिरीस
ई + इ	= ई	मही + इन्दर	= महीन्दर
ई + ई	= ई	जोगी + इस्वर	= जोगीस्वर
उ + उ	= ऊ	बिधु + उदय	= बिधूदय
उ + ऊ	= ऊ	सिंधु + ऊर्मि	= सिन्धूर्मि
ऊ + उ	= ऊ	बधू + उत्सव	= बधूत्सव
ऊ + ऊ	= ऊ	भू + ऊर्ध्व	= भूर्ध्व
ऋ + ऋ	= ऋ	मातृ + ऋण	= मातृण

(ii) **गुण स्वर संधि :**

नियम : जदि 'अ' इया 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' 'उ' या 'ऊ' आउ ऋ आवे तऽ दुन्नो मिल के क्रमसः ए, ओ आउ 'अर्' हो जा हे। **जइसे :**

संधि	उदाहरन
अ + इ = ए	देव + इन्दर = देवेन्दर
अ + ई = ए	दिन + ईस = दिनेस
आ + इ = ए	महा + इन्दर = महेन्दर
आ + ई = ए	महा + ईस = महेस
अ + उ = ओ	पर + उपदेस = परोपदेस
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उदय = महोदय
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

(iii) वृद्धि स्वर संधि :

नियम : जदि 'अ' इया 'आ' के बाद 'ए' इया 'ऐ' आवे तऽ दुन्नो के जगह 'ऐ' आऊ 'ओ' इया 'औ' आवे तब दुन्नो जगह 'औ' हो जा हे।

संधि	उदाहरन	
अ + ए = ऐ	एक + एक	= एकैक
आ + ऐ = ऐ	देव + ऐस्वर्य	= देवैस्वर्य
आ + ए = ऐ	तथा + एव	= तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐस्वर्य	= महैस्वर्य
अ + ओ = औ	जल + ओघ	= जलौघ
आ + ओ = औ	महा + ओज	= महौज
अ + औ = औ	भव + औसध	= भवौसध
आ + औ = औ	महा + औसध	= महौसध

(iv) यण् स्वर संधि :

नियम : जदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' आउ 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आवे तऽ 'इ'-'ई' के 'य्', 'उ' 'ऊ' के 'व्' आऊ 'ऋ' के 'र्' हो जा हे :

संधि	उदाहरन	
इ + अ = य्	अति + अंत	= अत्यंत
इ + आ = या	इति + आदि	= इत्यादि
इ + उ = यु	प्रति + उपकार	= प्रत्युपकार
इ + ऊ = यू	नि + ऊन	= न्यून
इ + ए = ये	प्रति + एक	= प्रत्येक
इ + ऐ = यै	जाति + ऐक्य	= जात्यैक्य
इ + ओ = यो	दधि + ओदन	= दध्योदन
उ + अ = व्	सु + अल्प	= स्वल्प
उ + आ = वा	सु + आगत	= स्वागत

उ + इ = वि	अनु + इति = अन्विति
उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण
उ + ओ = वो	गुरु + ओदन = गुर्वोदन
ऋ + अ = र	मातृ + अर्थ = मात्रर्थ
ऋ + आ = रा	मातृ + आदेश = मात्रादेश

(iv) अयादि स्वर संधि :

नियम : जदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आवे तऽ 'ए' के अय्, ऐ के आय् 'ओ'के अव् आउ 'औ' के आव् हो जा हे।

जइसे :

संधि	उदाहरण
ए + अ = अय्	ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय्	नै + अक = नायक
ओ + अ = अव्	पो + अन = पवन
औ + अ = आव्	पौ + अक = पावक

2. व्यंजन संधि : व्यंजन से स्वर इया व्यंजन के मेल से उत्पन्न बिकार व्यंजन संधि कहला हे।

नियम 1 : क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद यदि सानुनासिक बरन रहे तऽ क के जगह ङ्, च के जगह ञ्, ट के जगह ण, त के जगह न् आउ प के जगह म् हो जा हे। **जइसे :**

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
षट्	+	मार्ग	=	षण्मार्ग
उत्	+	नति	=	उन्नति
सत्	+	मार्ग	=	सन्मार्ग
अप्	+	मय	=	अम्मय
जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ

नियम 2 : जदि 'म्' के बाद कोई अन्तस्थ बरन (य, र, ल, व) इया उस्म बरन (श, ष, स, ह) रहे तो म् के स्थान पर अनुस्वार (ं) हो जा हे। **जइसे :**

सम्	+	यम	=	संयम
सम्	+	रक्षण	=	संरक्षण
सम्	+	लग्न	=	संलग्न
सम्	+	वाद	=	संवाद
सम्	+	सार	=	संसार
सम्	+	हार	=	संहार

नियम 3 : जदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद कोई स्वर इया य, र, ल, व, ह, इया वर्ग के तीसरा इया चौथा ब्यंजन में से कोई एक आवे तऽ क् च्, ट्, त्, प् के जगह अपनहीं वर्ग के तीसरा बरन क्रमसः ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जा हे। **जइसे :**

दिक्	+	गज	=	दिग्गज
अच्	+	अंत	=	अजंत
जगत्	+	ईस	=	जगदीस
अप	+	ज	=	अब्ज

नियम 4 : त् इया द् के बाद च इया छ रहे पर, त् इया द् के बदले च्, ज इया झ रहे पर ज्, ट इया ठ रहे पर ट् आउ ड इया द रहे पर ड् हो जा हे। **जइसे :**

उत्	+	चारण	=	उच्चारण
तत्	+	टीका	=	तट्टीका
उत्	+	छिन्न	=	उच्छिन्न
बिपद्	+	जाल	=	बिपज्जाल
उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल
सत्	+	जन	=	सज्जन

नियम 5 : जदि अनुस्वार के बाद स्वर बरन होवे तऽ अनुस्वार के बदले म् हो जा हे आउ आगे के स्वर से मिल जा हे। **जइसे** :

सं + आचार = समाचार

सं + उदाय = समुदाय

नियम 6 : जदि अनुस्वार के बाद स्पर्स बरन आवे तऽ अनुस्वार बिकल्प से अप्पन आगे के ब्यंजन के पाचवाँ बरन हो जा हे। **जइसे** :

सं + गीत = सङ्गीत (संगीत)

सं + चय = सञ्चय (संचय)

अहं + कार = अहङ्कार (अहंकार)

सं + धि = सन्धि (संधि)

नियम 7 : जदि त् इया द् के बाद श रहे तब त् इया द् के जगह च् आउ श के जगह छ् हो जा हे। **जइसे** :

उत् + शिस्ट = उच्छिस्ट

उत् + श्वास = उच्छ्वास

नियम 8 : जदि कोई सबद के अंत में त् इया द् रहे आउ ओकर बाद ह बरन आवे तब त् के जगह द् आउ ह् के जगह ध् हो जा हे। **जइसे** :

उत् + हरण = उद्धरण

उत् + हार = उद्धार

तत् + हित = उद्धित

उत् + हत = उद्धत

नियम 9 : जदि कोई सबद के अंत में त् इया द् रहे आउ ओकर बाद च इया छ आवे तब त् इया द् के जगह पर च् हो जा हे। **जइसे** :

शरद् + चन्द्र = शरच्चन्द्र

सत् + चित् = सच्चित

तत् + छवि = तच्छवि

नियम 10 : जदि त्, द् इया न् के आगे 'ल्' रहे तब त्, द्, न् के बदले 'ल्' हो जा हे बाकि न् के पहिले के अच्छर पर चन्द्रबिन्दु (ँ) भी लगऽ हे। **जइसे** :

उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

महान् + लाभ = महाँल्लाभ (महालाभ)

तत् + लीन = तल्लीन

उत् + लंघन = उल्लंघन

नियम 11 : जदि त् के आगे ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व इया कोई स्वर बरन रहे तब त् के द् हो जा हे। **जइसे :**

सत् + आचार = सदाचार

नियम 12 : जदि 'ज्' के बाद ञ होवे तब दुन्नो के बदले ज्ञ हो जा हे। **जइसे :**

यज् + ञ = यज्ञ

नियम 13 : जदि ह्रस्व स्वर के बाद छ बरन होए तऽ छ के बदले च्छ् हो जा हे। **जइसे :**

परि + छेद = परिच्छेद

अव + छेद = अवच्छेद

नियम 14 : जदि कोई सबद के अन्त में ष बरन के बाद तत् इया थ बरन आवे तब 'त' के जगह 'ट' आउ थ के जगह पर ठ हो जा हे।। **जइसे :**

पृष् + थ = पृष्ठ

षष् + थ = षष्ठ

आकृष् + त = आकृष्ट

तुष् + त = तुष्ट

3. बिसर्ग संधि : बिसर्ग के साथ स्वर इया ब्यंजन के मेल से जे बिकार हो हे, बिसर्ग संधि कहलावऽ हे।

नियम 1 : जदि बिसर्ग के पहिले अ, आ के छोड़ के कोई दूसर स्वर रहे आउ एकर बाद में वर्ग के पहला, दूसरा बरन आउ श, ष, स के छोड़ के कोई घोस ब्यंजन आउ स्वर बरन रहे तऽ बिसर्ग के स्थान पर 'र' हो जा हे। बाकि बिसर्ग के बाद 'र' रहला पर 'र' के लोप हो जा हे आउ बिसर्ग के पहिले के स्वर दीर्घ हो जा हे। **जइसे :**

नि: + आधार = निराधार

नि: + गुन = निर्गुन

दु: + गम = दुर्गम

आसी: + बाद = आसीर्बाद

नि: + रव = नीरव

नि: + रस = नीरस

नियम 2 : जदि बिसर्ग के पहिले इ या उ रहे आउ बिसर्ग के बाद च इया छ रहे तऽ बिसर्ग के जगह पर 'श्' हो जा हे, ट इया ठ रहे तऽ 'ष्' हो जा हे आउ त इया थ रहे तऽ स् हो जा हे। **जइसे :**

नि: + चल = निश्चल

दु: + चरित = दुश्चरित

नि: + ठुर = निष्ठुर

धनु: + टंकार = धनुष्टंकार

नि: + तार = निस्तार

दु: + तर = दुस्तर

नियम 3 : बिसर्ग के बाद श, ष, स रहे तऽ बिसर्ग बनल रह जा हे इया ओकर अगिला अच्छर बिसर्ग के बदला में संजुक्त रूप से लिखल जा हे। **जइसे :**

दु: + शासन = दु:शासन इया दुश्शासन

नि: + सहाय = नि:सहाय इया निस्सहाय

बहि: + षट = बहि:षट इया बहिष्षट

नियम 4 : बिसर्ग के पहिले 'अ' रहे आउ बाद में क, ख आउ प, फ रहे, तऽ बिसर्ग में बिकार न होवे। **जइसे :**

रज: + कण = रज:कण

प्रात: + काल = प्रात:काल

अन्त: + करण = अन्त:करण

नियम 5. जदि बिसर्ग के पहिले ई इया उ रहे आउ ओकर बाद क, ख इया प, फ रहे तऽ बिसर्ग के जगह पर 'ष' हो जा हे। **जइसे :**

निः	+	कपट	=	निष्कपट
दुः	+	कर्म	=	दुष्कर्म
दुः	+	प्रकृति	=	दुष्प्रकृति
निः	+	प्राण	=	निष्प्राण
निः	+	फल	=	निष्फल

नियम 6 : बिसर्ग के पहिले 'अ' रहे आउ एकर बाद कोई घोस ब्यंजन रहे तऽ बिसर्ग के जगह पर 'ओ' हो जा हे। **जइसे :**

अधः	+	गति	=	अधोगति
तमः	+	गुण	=	तमोगुण
यशः	+	दा	=	यशोदा
मनः	+	योग	=	मनोयोग
मनः	+	रथ	=	मनोरथ
तपः	+	वन	=	तपोवन

नियम 7 : अन्त्य 'र्' के बाद अघोस ब्यंजन रहला पर 'र्' के जगह बिसर्ग के परयोग कैल जा हे। **जइसे :**

अंतर	+	करण	=	अंतःकरण
अंतर	+	पुर	=	अंतःपुर

नियम 8 : जदि बिसर्ग के पहिले 'अ' रहे आउ बादो में 'अ' रहे तऽ बिसर्ग के जगह ओकार हो जा हे आउ बाद वाला 'अ' के जगह लुप्ताकर (ऽ) चिन्ह लग जा हे। **जइसे :**

प्रथमः	+	अध्याय	=	प्रथमोऽध्याय
यशः	+	अभिलाषी	=	यशोऽभिलाषी

बाकि, बिसर्ग के बाद अ के अलावे दूसर स्वर अयला पर बिसर्ग के लोप हो जा हे। **जइसे :**

अत: + एव = अतएव

देव: + ऋषि = देवऋषि

नियम 9 : जदि बिसर्ग के पहिले 'अ' इया आ स्वर रहे आउ ओकर बाद कर, कार इया काम के परयोग होए, तऽ बिसर्ग के जगह पर स् हो जा हे। **जइसे :**

नम: + कार = नमस्कार

भा: + कर = भास्कर

श्रेय: + कर = श्रेयस्कर

अभ्यास के प्रस्न

1. संधि के परिभासा आउ भेद उदाहरन के साथ लिखऽ।
2. स्वर संधि आउ ब्यंजन संधि के अंतर उदाहरन सहित स्पस्ट करऽ।
3. नीचे लिखल सब्दन के संधि-बिच्छेद करऽ :

   (क) नीरस (ख) निश्चल (ग) नि:सहाय (घ) अन्त:करन (ङ) दुस्कर्म (च) मनोरथ (छ) अंत:पुर (ज) प्रथमोऽध्याय (झ) नमस्कार (ञ) अतएव।
4. संधि बिच्छेद करऽ :

   (क) पवन (ख) इत्यादि (ग) एकैक (घ) देवर्षि (ङ) परमादर (च) महीन्दर (छ) महेन्दर।
5. संधि बिच्छेद करऽ :

   (क) उन्नति (ख) संयम (ग) जगदीस (घ) सज्जन (ङ) समुदाय (च) संगीत (छ) उच्छ्वास (ज) उद्धार (झ) शरच्चन्द्र (ञ) उल्लास (ट) सदाचार (ठ) यज्ञ (ड) परिच्छेद (ढ़) पृष्ठ।

संधि-कोस

अत्यंत	=	अति	+	अंत
अतएव	=	अत:	+	एव
आविस्कार	=	आवि:	+	कार
अत्यधिक	=	अति	+	अधिक
आसीर्बाद	=	आसी:	+	बाद
अत्याचार	=	अति	+	आचार
अधोगति	=	अध:	+	गति
अनुदार	=	अन्	+	उदार
अन्यान्य	=	अनि	+	अन्य
अभिसेक	=	अभि	+	सेक
अभीस्ट	=	अभि	+	इस्ट
अहंकार	=	अहम्	+	कार
इत्यादि	=	इति	+	आदि
उमेश	=	उमा	+	ईश
उल्लास	=	उत्	+	लास
उपेक्षा	=	उप	+	इक्षा
उल्लेख	=	उत्	+	लेख
उन्माद	=	उत्	+	माद
उल्लंघन	=	उत्	+	लंघन
उद्घाटन	=	उत्	+	घाटन
उज्ज्वल	=	उत्	+	ज्वल
उत्कृष्ट	=	उत्	+	कृष्ट
उद्धार	=	उत्	+	हार
उद्गार	=	उत्	+	गार

उद्गम	=	उत्	+	गम
उद्भव	=	उत्	+	भव
उन्नति	=	उत्	+	नति
उन्नयन	=	उत्	+	नयन
उरोज	=	उर:	+	ज
एकैक	=	एक	+	एक
एकांकी	=	एक	+	अंकी
एकानन	=	एक	+	आनन
एकेश्वर	=	एक	+	ईश्वर
कृष्णानंद	=	कृष्ण	+	आनंद
कवीन्द्र	=	कवि	+	इन्द्र
कवीश	=	कवि	+	ईश
कुशासन	=	कु	+	शासन
खगेन्द्र	=	खग	+	इन्द्र
गायक	=	गै	+	अक
अत्यधिक	=	अति	+	अधिक
गिरीश	=	गिरि	+	ईश
गजानन	=	गज	+	आनन
गणेश	=	गण	+	ईश
गंगेश	=	गंगा	+	ईश
गीतांजलि	=	गीत	+	अंजलि
धनानंद	=	घन	+	आनंद
चन्द्रोदय	=	चन्द्र	+	उदय
चयन	=	चे	+	अन
छात्रालय	=	छात्र	+	आलय

जगन्नाथ	=	जगत्	+	नाथ
झण्डोत्तोलन	=	झण्डा	+	उत्तोलन
तथागत	=	तथा	+	आगत
तथापि	=	तथा	+	अपि
तथैव	=	तथा	+	एव
जगन्नाथ	=	जगत्	+	नाथ
तपोवन	=	तपः	+	वन
तपोभूमि	=	तपः	+	भूमि
तद्धित	=	तत्	+	हित
तल्लीन	=	तत्	+	लीन
तपेश्वर	=	तप	+	ईश्वर
तद्वत	=	तत्	+	वत
तिरस्कार	=	तिरः	+	कार
तेजोराशि	=	तेजः	+	राशि
तेजोमय	=	तेजः	+	मय
दर्शनार्थ	=	दर्शन	+	अर्थ
दावानल	=	दाव	+	अनल
दुश्शासन	=	दुः	+	शासन
दुस्कर्म	=	दुः	+	कर्म
दुस्कर	=	दुः	+	कर
दुर्नीति	=	दुः	+	नीति
देशाटन	=	देश	+	आटन
द्रोणाचार्य	=	द्रोण	+	आचार्य
दसानन	=	दस	+	आनन
दयानंद	=	दया	+	आनंद
दीक्षांत	=	दीक्षा	+	अंत
दूरागत	=	दूर	+	आगत

देवालय	=	देव	+	आलय
दिग्दर्शन	=	दिक्	+	दर्शन
दुर्जन	=	दुः	+	जन
दुर्गति	=	दुः	+	गति
दुर्दिन	=	दुः	+	दिन
दुरात्मा	=	दुः	+	आत्मा
दिनेश	=	दिन	+	ईश
देवीच्छा	=	देवी	+	इच्छा
धर्मात्मा	=	धर्म	+	आत्मा
धनादेस	=	धन	+	आदेस
धनेस	=	धन	+	ईस
धावक	=	धौ	+	अक
नगेन्द्र	=	नग	+	इन्द्र
नमस्कार	=	नमः	+	कार
नयन	=	ने	+	अन
नरेन्द्र	=	नर	+	इन्द्र
नरेश	=	नर	+	ईश
नवोदय	=	नव	+	उदय
नायक	=	नै	+	अक
नागेन्द्र	=	नाग	+	इन्द्र
निराश	=	निः	+	आश
निर्जल	=	निः	+	जल
निर्मल	=	निः	+	मल
निषेध	=	निः	+	षेध
नीरोग	=	निः	+	रोग
नाविक	=	नौ	+	इक

पंचानन	=	पंच	+	आनन	भावुक	=	भौ	+	उक
पंचामृत	=	पंच	+	अमृत	भुवनेश्वर	=	भुवन	+	ईश्वर
पत्राचार	=	पत्र	+	आचार	भूतेश्वर	=	भूत	+	ईश्वर
परमार्थ	=	परम	+	अर्थ	मनोनुकूल	=	मन:	+	अनुकूल
परीक्षा	=	परि	+	इक्षा	मनोरंजन	=	मन:	+	रंजन
परोपकार	=	पर	+	उपकार	मनोरथ	=	मन:	+	रथ
परीक्षार्थी	=	परीक्षा	+	अर्थी	मनोहर	=	मन:	+	हर
पवन	=	पो	+	अन	मनोविकार	=	मन:	+	विकार
पवित्र	=	पो	+	इत्र	मनोविज्ञान	=	मन:	+	विज्ञान
पराधीन	=	पर	+	अधीन	मनोभाव	=	मन:	+	भाव
परमानंद	=	परम	+	आनंद	मनोरम	=	मन:	+	रम
परमेश्वर	=	परम	+	ईश्वर	महोत्सव	=	महा	+	उत्सव
पीताम्बर	=	पीत	+	अम्बर	मनोज	=	मन:	+	ज
पावक	=	पौ	+	अक	मनोबल	=	मन:	+	बल
पावन	=	पौ	+	अन	महात्मा	=	महा	+	आत्मा
प्रत्येक	=	प्रति	+	एक	महीश्वर	=	मही	+	ईश्वर
प्रात: काल	=	प्रात:	+	काल	महेन्द्र	=	महा	+	इन्द्र
पुरस्कार	=	पुर:	+	कार	मुनीश	=	मुनि	+	ईश
प्राध्यापिका	=	प्र	+	अध्यापिका	महोदय	=	महा	+	उदय
प्रधानाचार्य	=	प्रधान	+	आचार्य	यथोचित	=	यथा	+	उचित
ब्रजेश	=	ब्रज	+	ईश	यद्यपि	=	यदि	+	अपि
ब्रह्मर्षि	=	ब्रह्म	+	ऋसि	यशोदा	=	यश:	+	दा
भवन	=	भो	+	अन	यशोधरा	=	यश:	+	धरा
भोजनालय	=	भोजन	+	आलय	योगेन्द्र	=	योग	+	इन्द्र
भवति	=	भो	+	अति	रसाभास	=	रस	+	आभास
भवेस	=	भव	+	ईस	रामायण	=	राम	+	अयन

राजेन्द्र	=	राज	+	इंद्र
रामाधार	=	राम	+	आधार
रामेश्वर	=	राम	+	ईश्वर
रत्नावली	=	रत्न	+	आवली
रेखांकित	=	रेखा	+	अंकित
लंबोदर	=	लंब	+	उदर
व्यर्थ	=	वि	+	अर्थ
वहिष्कार	=	वहि:	+	कार
वागीश	=	वाक्	+	ईश
वामेश्वर	=	वाम	+	ईश्वर
विसर्ग	=	वि	+	सर्ग
विद्यालय	=	विद्या	+	आलय
विद्यार्थी	=	विद्या	+	अर्थी
विद्योपार्जन	=	विद्या	+	उपार्जन
विच्छेद	=	वि	+	छेद
व्रजेश	=	व्रज	+	ईश
वस्त्रालय	=	वस्त्र	+	आलय
शांति	=	शाम्	+	ति
शिष्टाचार	=	शिष्ट	+	आचार
संकल्प	=	सम्	+	कल्प
संगम	=	सम्	+	गम
संधि	=	सम्	+	धि
संसार	=	सम्	+	सार
संवाद	=	सम्	+	वाद
संगठन	=	सम्	+	गठन

सच्चिदानंद	=	सत्	+	चित्	+	आनंद
सज्जन	=	सत्	+	जन		
सत्याग्रह	=	सत्य	+	आग्रह		
सद्भाव	=	सत्	+	भाव		
सद्गुरु	=	सत्	+	गुरु		
सदैव	=	सदा	+	एव		
सरोज	=	सर:	+	ज		
सरोवर	=	सर:	+	वर		
सदाचार	=	सत्	+	आचार		
सर्वोदय	=	सर्व	+	उदय		
सर्वोत्तम	=	सर्व	+	उत्तम		
संगीत	=	सम्	+	गीत		
संस्कृति	=	सम्	+	कृति		
संस्कार	=	सम्	+	कार		
संघटन	=	सम्	+	घटन		
संजय	=	सम्	+	जय		
संदीप	=	सम्	+	दीप		
संताप	=	सम्	+	ताप		
सुरेन्द्र	=	सुर	+	इन्द्र		
सुरेश	=	सुर	+	ईश		
स्वाभिमान	=	स्व	+	अभिमान		
हरीश	=	हरि	+	ईश		
हिमालय	=	हिम	+	आलय		
ज्ञानेश्वर	=	ज्ञान	+	ईश्वर		
ज्ञानांजन	=	ज्ञान	+	अंजन		

सबद बिचार

सबद : सबद एगो इया एगो से अधिक ध्वनि इया बरन के मेल से बनल स्वतंत्र आउ सार्थक ध्वनि हे। **जइसे** :

हम, तूँ, ऊ, अदमी, माय आदि

सबद भेद : सबद के बर्गीकरन नीचे अधार पर करल जा सकऽ हे :

1. उद्‌गम के अधार पर
2. अर्थ के अधार पर
3. ब्युत्पत्ति के अधार पर
4. रूपान्तर के अधार पर

1. उद्‌गम के अधार पर : ई अधार पर पता चलऽ हे कि कउनो सबद अपन मूल रूप में कउन स्रोत से आयल हे। ई अधार पर सबद-समूह के पाँच भेद कैल गेल हे :

(क) तत्सम (ख) अर्द्धतत्सम (ग) तद्‌भव

(घ) देसज (ङ) बिदेसज

(क) **तत्सम** : तत्सम ऊ सबद हे जेकर रूप हू-बहू संस्कृत भासा के सबद जइसन होवऽ हे। **जइसे** :

अग्नि, रात्रि, मृत्यु, पुष्प आदि

(ख) **अर्द्ध तत्सम** : अर्द्ध तत्सम सबद संस्कृत से तनी बिगड़ के बाकि सीधे मगही में आयल हे। **जइसे** :

कृष्ण – किसुन

कार्य – काज

(ग) **तद्‌भव** : तद्‌भव सबद संस्कृत, प्राकृत आउ अपभ्रंस से होइत रूप बदल के मगही में आयल हे। **जइसे** :

पुस्तिका – पोत्थिआ – पोथिआ – पोथी

गोबिष्ठा – गोबिट्‌ठा – गोईट्‌ठा – गोइठा

(घ) **देसज** : देसज ऊ सबद हे, जे अपने भासा छेत्र में उत्पन्न होयल हे। **जइसे** : थारी, लोटा, नेठो, मुरेठा, धोकड़ी, अरार, लाठा, करहा, बरहा आदि।

(ङ) **बिदेसज** : बिदेसी भासा से आयल सबद बिदेसज सबद कहलावऽ हे। **जइसे** : अमीर, अदमी, दिमाग, इज्जत, कसम, तनख्वाह, तारीख, कोट, रेल, नोट, टिकट, स्कूल, कॉलेज, कॉपी, रजिस्टर, रिपोर्ट आदि।

2. **अर्थ के अधार पर** : अर्थ के अधार पर सबद के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) बाचक (ख) लच्छक (ग) ब्यंजक

(क) **बाचक** : बाचक सबद से कउनो सबद के सीधा अर्थ परगट होवऽ हे। जइसे: (i) **गदहा** चरइत हे। (ii) **बैल** जाइत हे।

ई दुन्नो वाक्य में गदहा आउ बैल बाचक सबद के उदाहरन हे जे गदहे आउ बैल के अर्थ ब्यक्त करइत हे।

(ख) **लच्छक** : लच्छक सबद अप्पन सामान्य अर्थ छोड़ के बिसेस अर्थ परगट करऽ हे। **जइसे** : (i) मोहन गदहा हे। (ii) सोहन बैल हे।

ई दुन्नो वाक्य में गदहा आउ बैल जानवर बिसेस के बोध न करइत बिना दिमाग के खटे वाला इया बुड़बक के बोध करइत हे। ई लेल ई दुन्नो लच्छक हे।

(ग) **ब्यंजक** : ब्यंजक सबद से बाच्यार्थ आउ लच्छ्यार्थ छोड़ के ब्यंग्यार्थ के बोध होवऽ हे। **जइसे** : (i) कउआ बोले लगल। (ii) मुर्गा बाँग देवे लगल।

ई दुन्नो के ब्यंग्यार्थ हे कि 'भोर हो गेल' इहाँ कउआ आउ मुर्गा ब्यंजक सबद हे।

3. **ब्युत्पत्ति के अधार पर** : ब्युत्पत्ति अर्थात् बनावट इया रचना के अधार पर सबद के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) रूढ़ (ख) जौगिक (ग) जोगरूढ़ि (जोगरूढ़)

(क) **रूढ़** : रूढ़ ऊ सबद हे जेकर खंड इया टुकड़ा करे पर अर्थ न निकले। **जइसे** : घड़ा।

'घड़ा' सबद के खंड करे पर 'घ' आउ 'ड़ा' अलगे–अलगे होवे पर अर्थहीन हो जाहे। दुन्नो सबद मिलिए के सार्थक सबद घड़ा बन सकऽ हे। ई लेल घड़ा रूढ़ सबद हे।

(ख) **जौगिक** : जौगिक सबद एगो से जादे सबद के मेल से बनऽ हे। ई लेल एकर खंड कयला पर सब्भे खंड सार्थक रहऽ हे। **जइसे** : बिद्यालय।

बिद्यालय के दुन्नो खंड (बिद्या+आलय) के अप्पन-अप्पन अर्थ हे। ई लेल बिद्यालय जौगिक सबद हे।

(ग) **जोगरूढ़ि** : जोगरूढ़ि सार्थक सबद के मेल से बनल ऊ सबद हे जे अप्पन सामान्य अर्थ छोड़ के बिसेस अर्थ के बोध करावऽ हे। **जइसे** : पंकज।

एकरा में दू सबद खंड हे– पंक + ज। पंक माने कादो आउ ज माने जनमल। पंकज के सामान्य अर्थ होयल कादो से जनमल। कादो से तो ढेर चीज जनमऽ हे बाकि सब्भे के पंकज न कहल जाय। पंकज के बिसेस अर्थ हे–'कमल'। ई लेल 'पंकज' सबद जोगरूढ़ि हे।

4. **रूपान्तर के अधार पर** : रूपान्तर के अधार पर सबद के दू भेद हे : (1) बिकारी (2) अबिकारी

(1) **बिकारी सबद** : जउन सबद के रूप अर्थ के कारन इया दूसर सबद के संबंध से बदल जा हे ऊ बिकारी सबद कहला हे। संग्या, सर्बनाम, बिसेसन आउ क्रिया बिकारी सबद हे।

(2) **अबिकारी सबद** : जउन सबद के रूप अर्थ के कारन इया दूसर संबंध से न बदले ऊ अबिकारी सबद कहलावऽ हे। अबिकारी सबद के दूसरा नाम अब्यय हे।

क्रिया बिसेसन, समुच्चयबोधक, सम्बन्धबोधक आउ बिस्मयादिबोधक सबद अबिकारी इया अब्यय कहला हे।

ई तरी रूपान्तर के अधार पर सबद के ***पाँच भेद*** हो जा हे :

संग्या, सर्बनाम, बिसेसन, क्रिया आउ अब्यय।

अभ्यास के प्रस्न

1. सबद केकरा कहल जा हे? एकर बर्गीकरन करऽ ।
2. उद्गम के अधार पर सबद-समूह के कै भेद होवऽ हे? बरनन करऽ।
3. अर्थ के अधार पर सबद के भेद के बरनन करऽ।
4. ब्युत्पत्ति के अधार पर सबद के कै गो भेद होवऽ हे? बतावऽ।
5. रूपान्तर के अधार पर सबद के भेद बतावऽ आउ एकर बरनन करऽ।

●

संग्या

संग्या : जउन सबद से कउनो ब्यक्ति, बस्तु, स्थान, जाति, गुन इया भाव के नाम प्रकट हो हे, संग्या कहलावऽ हे। जइसे :

राम, खटिया, पटना, गाय, लइकाई, आदि।

संग्या के पाँच भेद होवऽ हे :

1. **ब्यक्तिवाचक संग्या** : ब्यक्तिवाचक संग्या से अदमी, चीज इया जगह बिसेस के नाम के समझ होवऽ हे। **जइसे** : मोहन, गया, पुनपुन, आदि।

2. **जातिवाचक संग्या** : जातिवाचक संग्या से अदमी इया चीज के समूचे जाति के बोध होवऽ हे। **जइसे** : अदमी, नदी, पहाड़, घर, सहर, घोड़ा आदि।

3. **भाववाचक संग्या** : भाववाचक संग्या से कउनो ब्यक्ति इया चीज के धरम, गुन, अवस्था इया ब्यापार के समझ होवऽ हे। **जइसे** : करिअई (कालापन), लइकाई (बचपना) नरमई (नम्रता) आदि।

4. **द्रब्यवाचक संग्या** : द्रब्यवाचक संग्या से कोई द्रब्य, पदार्थ इया धातु के समझ होवऽ हे जेकरा नापल इया तउलल जा हे। एकर गिनती न होवे आउ बहुबचन न होवे। **जइसे** :तेल, घीउ, पानी, सोना, चाँदी आदि।

5. **समूहवाचक संग्या** : समूहवाचक संग्या से अदमी इया चीज के समूह के समझ होवऽ हे। **जइसे** : सेना, सभा, भीड़, घउद आदि।

संग्या के रूप :

रूप-रचना के अधार पर संग्ज्ञा के ***चार रूप*** होवऽ हे :

(क) ह्रस्व-निर्बल

(ख) ह्रस्व-सबल

(ग) दीर्घ

(घ) अतिरिक्त

(क) **ह्रस्व-निर्बल रूप** : ई अक्सर ह्रस्व स्वरांत इया ब्यंजनांत होवऽ हे।

जइसे : ह्रस्व स्वरान्त–लोह, मीठ, तोड़, जोड़ आदि।

ब्यंजनान्त–लोह्, मीठ्, तोड्, जोड् आदि।

(ख) **ह्रस्व-सबल रूप** : एकरा में संग्या के अन्तिम स्वर के दीर्घ करके बनावल जा हे। **जइसे** : लोहा, घोड़ा, मीठा, तोड़ा, जोड़ा आदि ।

(ग) **दीर्घ रूप** : संग्या के ह्रस्व-निर्बल रूप में 'या' इया 'वा' प्रत्यय जोड़ के दीर्घ रूप बनावल जा हे। **जइसे** :

ह्रस्व–घर	ह्रस्व–नट	ह्रस्व–फर
दीर्घ–घरवा	दीर्घ–नटवा	दीर्घ–फरवा

जदि संग्या के ह्रस्व सबल रूप होवे तऽ पहिले ओकरा ह्रस्व निर्बल रूप बना के फिर 'या' इया 'वा' प्रत्यय जोड़ के दीर्घ रूप बनावल जा हे।

जइसे : घोड़ा – घोड़वा

पोथी – पोथिया

(घ) **अतिक्ति रूप** : एकर रचना संग्या के दीर्घ रूप के अन्तिम प्रत्यय के पुनरावृति करके होवऽ हे :

दीर्घ – मलिया

अतिरिक्त – मलियवा

दीर्घ – पोथिया

अतिरिक्त – पोथियवा

अभ्यास के प्रस्न

1. संग्या के पाँच भेद कउन-कउन हे ? दू-दू गो उदाहरन के साथ बतावऽ।
2. रूप रचना के अधार पर संज्ञा के भेद एक-एक गो उदाहरन के साथ बतावऽ।

लिंग

लिंग : संग्या के ओइसन रूप जेकरा से कोई ब्यक्ति इया बस्तु के जाति (स्त्री-पुरुष) के बोध होवे, लिंग कहला हे।

लिंग ***दू प्रकार*** के होवऽ हे :

पुल्लिंग : पुल्लिंग संग्या के ऊ रूप हे जेकरा से संग्या के पुरुस जाति के बोध होवऽ हे। जइसे : राजा, लइका, सूरज, बाघ, आदि।

स्त्रीलिंग : स्त्रीलिंग संग्या के ऊ रूप हे जेकरा से संग्या के स्त्री जाति के बोध होवऽ हे। जइसे : रानी, लइकी, बाघिन, गाय, नदी आदि।

लिंग निर्नय के ***तीन गो*** अधार हे :बेवहार, अर्थ आउ रूप

1. अर्थ आउ रूप के दृस्टि से पुल्लिंग आउ स्त्रीलिंग में बँटल संग्या:

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
खंढ़	बोरसी	भन्सा	बड़ेरी
लूगा	मउनी	लेदा	चिंरई
चूल्हा	बथानी	बाबू	मड़ई
लेरू	ओलती	बरद	गाय

2. कुछ पुल्लिंग संग्या में 'आइन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे। अइसन करइत समय जदि मूल सबद में दीर्घ स्वर रहे तो ओकरा ह्रस्व कर देवल जा हे। जइसे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
गुरु	गुरुआइन
बाबू	बबुआइन

3. कुछ पुल्लिंग संग्या में 'इन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे। अइसन संग्या अकारान्त होवे तऽ स्वर अ मिला के 'इन' प्रत्यय लगावल जा हे। आकारान्त रहला पर सीधे 'इन' प्रत्यय लगा देल जा हे।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मलाह	मलाहिन
जाट	जाटिन
बनिया	बनियाइन
मछुआ	मछुआइन

4. प्रानीवाचक आकारान्त पुल्लिंग संग्या में 'ई' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे। प्रत्यय लगावे के पहिले स्वर 'आ' हटा देवल जा हे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
साला	साली
महरा	महरी
मउगा	मउगी

5. आकारान्त संग्या में 'इया' प्रत्यय जोड़ के स्त्रीलिंग रूप बनावल जा हे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
घोड़ा	घोड़िया
बूढ़	बुढ़िया

6. कुछ पुल्लिंग संग्या में 'नी' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनावल जा हे :

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मुसहर	मुसहरनी
मेहतर	मेहतरनी

7. कुछ पुल्लिंग संग्या के अंत में में आवे वाला स्वर के लुप्त कर के 'ऐनी' प्रत्यय जोड़ के स्त्रीलिंग रूप बनावल जा हे। **जइसे :**

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
खत्री	खत्रैनी
कुंजड़ा	कुंजड़ैनी

8. कई गो स्त्री प्रत्यान्त सबद के खाली स्त्रीलिंग में परयोग होवऽ हे। जइसे : सती, गाभिन, सौतिन, सोहागिन, अहिवात, डाइन, डैनी, चुड़ैल आदि।

लिंग के संबंध में कुछ महत्वपूर्न बात नीचे लिखल जाइत हे :

(क) संग्या के लिंग ग्यान क्रिया द्वारा न हो हे, काहे कि क्रिया लिंग–भेद से अप्रभावित रहऽ हे। **जइसे :** मोहन जा हई। गौरी जा हई।

(ख) एकरा में लिंग के कारन सम्बन्ध कारक के चिन्ह में भी कोई परिवर्तन न हो हे। **जइसे :** राम के भाई, राम के बहिन।

(ग) बिसेसन में भी लिंग के कारन कोई परिवर्तन न हो हे। **जइसे :** भुक्खल गइया; भुक्खल बैला।

अभ्यास के प्रस्न

1. मगही भासा में लिंग कै गो होवऽ हे ? दू-दू गो उदाहरन के साथ लिखऽ।

●